Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 4, April - 2023 Publication Date: 05/04/2023

DOIs:10.2018/SS/202304001 --:-- Research Paper / Article / Review

आधुनिक कुड़मालि साहित्य का उद्भव एवं विकास

[1] त्रिलोचन प्रसाद महतो, [2] डॉ. प्रमेश्वरी प्रसाद महतो

[1] शोधार्थी, कुड़मालि भाषा विभाग,राँची विश्वविद्यालय, राँची

[2] शोध निर्देशक डॉ. प्रमेश्वरी प्रसाद महतो, कुड़मालि भाषा विभागध्यक्ष, डॉ. एस. पी. एम. विश्वविद्यालय, राँची

Email – [1]trilochanprasadmahto@gmail.com, [2]ppmahto2014@gmail.com,

सारांश: कुड़मालि गद्य साहित्य का उद्भव सर्वप्रथम ग्रियसर्न ने सन 1903 ई. मे "भारत का भाषा सर्वेक्षण" में कुड़मालि भाषा की व्याकरणिक विशेषताओं का विस्तृत एवं वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत किया। कालान्तर विभिन्न पत्र.पत्रिकाओं पर कहानी, निबंध आदी प्रकाषित होते रहे है साहित्य का विकाष मे 20 वी, शताब्दी के नब्बे के दशक पर जोर पकड़ा वह सिलसिला अब तक चलते रहा है। नब्बे के दशक में झारखंड राज्य के रांची विश्वविद्यालय रांची में कुड़मालि की पढ़ाई चालू हुई तत्पश्चात झारखंड राज्य के विनावा भावे विश्वविद्यालय हजारीबागॉबिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबादॉडा, श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची एवं पश्चिम बंगाल में सिन्दु कान्हु बिरसा विश्वविद्यालय पुरूलिया, पंडित रघुनाथ मूर्मू विश्वविद्यालय झाड़ग्राम में। वर्तमान समय पर झारखंड राज्य में वर्ग आठ से लेकर पीएच. डी. तक की पढ़ाई हो रही हैं। पुस्तक के अभाव में एक ही पुस्तक कई विश्वविद्यालय पर चल रही है। आधुनिक कुड़मालि गद्य साहित्य के विकास पथ पर अग्रसरित है समय के अनुरूप जीतने गद्य साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन होना चाहिए। इसकी उपेक्षा बहुत कम हुआ है ।

मुख्य बिंदु: गद्य साहित्य का उद्भव, विकास, कुड़मालि भाषा की पढ़ाई ।

1. प्रस्तावना :

आधुनिक कुड़मालि गद्य साहित्य का उद्भव 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में मानी जाती है। श्री जी. एफ. हेमिल्टन की पुस्तक 'दी गोसपेल ऑफ सन्त मार्क' जिसका प्रकाशन 1903 ई. में दार्जिलिंग में हुआ। इनके अनुसार कुड़मालि गद्य साहित्य का विकास 19 वीं शताब्दी में इसाई मिशनरियों द्वारा हो चुका था। इसाई मिशनरियों ने बाईबिल के कुछ अंशों का अनुवाद कुड़मालि में किया था जो 'बेसहाल मार्क के बनावल में मिलता है **(सिंह, 2010)**। इसके बाद डॉ. जार्ज ग्रियर्सन द्वारा संग्रहित 'लिंग्विसटिक सर्वे ऑफ इंडिया खण्ड - 5 भाग - 2 में दो व्यक्तियों के आपस में हुए वार्तालाप से माना जा सकता है **(ग्रियर्सन, 1903)**। इसमें मानभूम की कुड़मालि में एक लोककथा एवं अदालत में एक अभियुक्ति का बयान को प्रस्तुत किया गया है। इसी ग्रंथ में आगे मयूरभंज, क्योंझर और बामड़ा की कुड़मालि में एक लोककथा एवं दो व्यक्तियों के वर्तालाप को प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। विषय-वस्तु की दृष्टि से इन गद्यों को न तो नवीन ही कहा जा सकता है और न सृजनात्मक लेखन ही। क्योंकि डॉ. ग्रियर्सन का मुख्य उद्देश्य कुड़मालि भाषा के गद्य रूप को स्थानीय भेद के साथ प्रस्तुत करना रहा है।

2. गद्य साहित्य का विकास :

1953 ई. में राजेंद्र प्रसाद महतो द्वारा स्वरचित 'कपिला मंगला' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। हालांकि कपिला मंगला की विषय वस्तु की दृष्टि से किसी पौराणिक कथा पर आधारित है। फिर भी आधुनिक परिवेश में अपने शब्दों में इसको प्रकट किया है। अतः कुड़मालि साहित्य जगत में यह पहला स्वतंत्रा गद्य साहित्य के श्रेणी में रख सकते हैं। सन् 1958 ई. में डा0 विश्वनाथ प्रसाद एंव सुधाकर झा शास्त्री ने -लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ मानभूम एंव धलभूम में कुड़मालि भाषा के गीतों के कुछ नमूने प्रस्तूत किय **(प्रसाद, शास्त्री, 1958)**। कुड़मालि गद्य साहित्य के इतिहास में 1980 ई. का दशक बहुत ही उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण रहा। इस दशक में गद्य साहित्य के कई पुस्तकें प्रकाशित हुई जो इसके कई विधाओं में उपलब्ध मिलती है। 1982 ई. में झालदा से प्रकाशित 'मानभूम एक्सप्रेस' पत्रिका में निरंजन महतो की 'बुद्विक दाम'तथा प्रभावती महतो की 'मीरतुग खजे', 'राक्षसी आर अमरी' तथा 'भाँडी लेवेक कायदा' कहानियाँ प्रकाशित मिलती है। वस्तुतः ये लोककाथाएँ ही है। कथा-वस्तु की दृष्टि से ये नई नहीं कही जा सकती है। इसी वर्ष 1982 ई. प्रो. चन्द्र मोहन महतो द्वारा संपादित 'कुड़मालि केहनि जुड़ति' नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ **(महतो, 1982)** । यह

इस पुस्तक में कुल सात कहानियाँ है, जिनमें दो लोककथाएँ और पांच आधुनिक कहानियाँ है। इन कहानियों में कुड़माली के स्थानीय भेदों को देखा जा सकता है। बावजूद स्वतंत्रा रूप से कुड़माली की प्रथम गद्य साहित्य कही जा सकती है। सन् 1983 ई. में दो-दो गद्य साहित्य प्रकाशित हुई। पहला डॉ. शशिभूषण महतो द्वारा संपादित 'गइद-पइद जुड़ति' में चार कहानियाँ छपी मिलती है, जो नये विषय-वस्तु को लेकर लिखी गयी है। दूसरी पुस्तक कुड़माली गद्य साहित्य के इतिहास में पहली नाटक साहित्य कालीपद महतो द्वारा स्वरचित 'केरिआ बहु' नाम से प्रकाशित हुई **(कालीपद, 1983)**।

सन् 1984 ई. में राँची से प्रकाशित नागपुरी कला संगम पत्रिका में एच. एन. सिंह की 'आर नि रहम' है। इसी प्रकार रेखा सिंह विचरित पुस्तक 'मानभूमेर लोक साहित्य व शब्दकोष' में धरम ठाकुर, करम एकादशी, कुड़माली गद्य आदि छोटी - छोटी कहानियाँ बंगला लिपि परंतु इसके भाषा कुड़माली है, प्रकाशित हुई। विष्णु चरण राय की कहानी 'डिंग उड़लेइक बांसेक ठेंगा' पुरूलिया से प्रकाशित 'सारहुल' पत्रिका में 1985 ई. में प्रकाशित हुई। यह कहानी भी लोक कथा पर आधारित है। 1986 ई. में करूणामयी महतो की 'संजति' नामक कहानी 'करमतीर्थ' पत्रिका में प्रकाशित का उल्लेख मिलता है। ये कहानियाँ आधुनिक परिवेश में लिखी गई कहानियाँ है। इसी वर्ष तुलीन से प्रकाशित कुड़माली पत्रिका 'बानार' में सरोज कुमार की 'डाइर छाड़ा बांदर' लोक कथा प्रकाश में आयी। 1987 ई. के आस-पास सुनिल महतो एवं अनंत महतो द्वारा सम्पादित 'सातुल' नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें सात आधुनिक परिवेश की कहानी है। इसके बाद उड़िसा से 'मरन-जाला' नाटक प्रकाशित हुआ है। इसके बाद गोड्डा जिला से प्रकाशित 'फुलबाप' नाटका प्रकाशित हुआ है। सन 1997 ई. में सुरेन्द्र नाथ महतो द्वारा लिखीत 'गाँधीक जय' कुड़माली का प्रथम उपन्यास प्रकाशित हुआ **(एस. महतो, 1997)**। इनके पूर्व में भी कई उपन्यास लिखा जा चुका है पर अर्थाभाव के कारण पाण्डुलिपी में पड़ा हुआ है। इनमें से रिझू लिखित उपन्यास 'जितु', दशरथ महतो का 'फुलमनी', सुनिल महतो का 'गिरगिट' इसके अलावे रामजीवन सिंह, कैलाश महतो, नमीता महतो ने भी अच्छी - अच्छी उपन्यास की रचा की है।

कुड़माली के गद्य रूप में कुड़माली निबंधों में सबसे अधिक प्रकाशित मिलता है। जिनमें कुर्मी शब्द, पुरूलिया काँदे, सोहराई परब, कुरमाली भाषा कर कबि आर साहित्यकार, सरहुल, पुरूलियाक शहिद, कुरमी आर कुरमाली भाखि, फफरिंग, झाड़खंडेक देवी-देवता भूत-प्रेत, कुड़मी किना हेकत, कुरमाली कर लोक नाट्य, इराइरि छौ नृत्य। इस प्रकार अनेकों कुड़माली के भाषाविद्वों ने विभिन्न विधाओं में रचना कर कुड़माली के गद्य भागों को समृद्ध करने के योगदान रहा है। 2008 ई. में डॉ. एच. एन. सिंह द्वारा स्वरचित निबंध की पुस्तक 'एहे डहरे' का प्रकाशन हुआ। 2010 ई. में डॉ. एच. एन. सिंह एवं बिजराज महतो द्वारा स्वरचित 'कुड़माली निबंध' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसी वर्ष नाटक विधा की दो पुस्तक अनंत केसरिआर द्वारा स्वरचित नाटक 'जाहलि' एवं ललित मोहन महतो द्वारा स्वरचित एवं डॉ. वृंदावन महतो द्वारा अनुवादित कुड़माली एकांकी की पुस्तक 'चासिक हाल' का प्रकाशन हुआ।

वर्ष 2012 ई. में जतिलाल महतो द्वारा स्वरचित नाटक की पुस्तक 'गरबिचार' प्रकाशित हुई है। 2012 ई. में निताई चंद्र महतो द्वारा गद्य विधा में रचित 'आंधरिआ राइत' नामक कुड़माली उपन्यास की पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसी वर्ष कालिपद महतो द्वारा स्वरचित 'सांखा सिंदुर' नामक नाटक विधा की पुस्तक प्रकाशित हुई है। वर्ष 2013 ई. में डॉ. परमेश्वर महतो द्वारा स्वरचित एवं निताई चंद्र महतो द्वारा अनुवादित कुड़माली भाषा में संभवतः पहली आयुर्वेदिक पुस्तक 'झारखंडि माटिक गुन' नाम से प्रकाशन हुआ। इसी वर्ष निताई चंद्र महतो निबंध की एक छोटी सी पुस्तक 'कुड़माली रचना' नाम से प्रकाशित हुई। 2013 ई. में अनंद खुंटदार के 'खांखुस' नामक कुड़माली उपन्यास की पुस्तक प्रकशित हुई है।

2015 ई. में निताई चंद्र महतो द्वारा स्वरचित दो गद्य विधा में पुस्तकें प्रकाशित हुई पहली एकांकी विधा में 'सादा हांथि', दूसरी कहानी की पुस्तक 'जालनाक उपार' नाम से प्रकाशित हुई। 2017 ई. में डॉ. विजय मुखर्जी द्वारा स्वरचित नाटक की पुस्तक 'फलाफल', 'कुड़माली के प्रमुख कबि और साहित्यकार' इसी वर्ष डॉ. मानसिंह महतो द्वारा स्वरचित नाटक 'भुति' नाम से प्रकाशन हुआ। वर्ष 2018 ई. में डॉ. मानसिंह महतो द्वारा रचित एवं डॉ. मंजय प्रमाणिक संपादित 'किना चंग उठलेइक' उपन्यास प्रकाश में आया। 2019 ई. वर्ष में डॉ. मानसिंह महतो द्वारा रचित एवं डॉ. मंजय प्रमाणिक द्वारा संपादित 'कांड़ काठि प्रेम' नामक उपन्यास का प्रकाशन हुआ। इसी वर्ष 'मरांग गोमके' जयपाल सिंह नाटक जिनके लेखक डॉ. गिरिधारी राम गौंझ एवं अनुवादक डॉ. मंजय प्रमाणिक हैं, का प्राकाशन हुआ। 2021 ई. में डॉ. एन. सि. केड़ुआर द्वारा रचित 'मुड़ेक बझा' नाम से कुड़माली गद्य साहित्य के इतिहास में पहली यात्रा-वृतांत की पुस्तक प्रकाश में आया। इसमें कुल मिलाकर 11 स्मरण को शामिल किया गया है।

3. निष्कर्ष :

कहा जा सकता है कि आधुनिक कुड़माली गद्य साहित्य के विकास पथ पर अग्रसरित है। जो समय के साथ इसमें नये-नये विषय और विधा समावेश हो रहा है। इसके गद्य साहित्य आधुनिक रचित साहित्य के विविध विधाओं में निरंतर विकास पथ पर अग्रसर है, जो समय की मांग है। तथापि कुड़माली के जितने गद्य साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन होना चाहिए आशानुरूप कम ही हुआ है। क्योंकि कुड़माली एक साहित्यिक एवं शैक्षणिक भाषा के रूप में झारखंड में पिछले 40 वर्षों से राज्य के कई विश्वविद्यालयों में एक विषय की भांति कक्षा आठ से मैट्रिक स्तर, इंटर, स्नातक, सर्टिफिकेट कोर्स, स्नातकोत्तर पढ़ाई के साथ शोध कार्य हो रही है। साथ ही पिछले 10 वर्षों से पश्चिम बंगाल में भी कुड़माली एक स्वतंत्र विषय के रूप में इस भाषा की पढ़ाई पीजी डिपलोमा, सर्टिफिकेट कोर्स, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर हो रही है। बावजूद इन कोर्सों में इसके पाठ्यक्रम में गद्य साहित्य की पुस्तकों की

कमी स्पष्ट देखने को मिलता है। इनमें से कई पुस्तक एक से ज्यादा विश्वविद्यालय के कोर्स में रखा गया है जो इसके साहित्यिक कमी को दर्शाता है। अतः इसके गद्य साहित्य का जितना विकास होना चाहिए था, उतना विकास नहीं हो पाया है। वर्तमान में इसके साहित्यिक विकास एवं इसको आगे सिंचने के लिए अनेकों साहित्यकार लगे हुए हैं तथा युवा लोगों को नये साहित्यकार के रूप में उभरने का भरपूर सहयोग कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. ग्रियर्सन, डॉ. जॉर्ज (1903). भारत का भाषा सर्वेक्षण, खंड दो
2. सिंह, डॉ. एच. एन. (2010). कुरमाली साहित्य विविध संदर्भ, कुरमाली भाषा परिषद्, राँची
3. महतो, नि. च. (2019). कुड़मालि चिनहाप, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची
4. सिंह, डॉ. एच. एन. (2008). एहे डहरे, कुरमाली भाषा परिषद्, राँची
5. महतो, का. (1983). केरिया बहु, मुलकि कुड़मालि भाखि बाइसि, राँची
6. मेहता, ब. कु. (1989). कुड़मालि चारि, मुलकि कुड़मालि भाखि बाइस, राँची